❖ अमरावती, गुरुवार २३ सितंबर से २ अक्तूबर २०२४ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक १४ ❖ पृष्ठ ८ ❖ मूल्य १०/- ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2022-2024 डाक : शुक्रवार – शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

विशेषांक

बाबूजी के
आदर्श विचार

भोलेनाथ की कृपा होने पर जीवन में हमारी हर राह आसान हो जाती है. केवल हमारा भरोसा ही भक्ति का परिचायक होता है. श्रद्धा और विश्वास के सहारे असंभव भी संभव हो जाता है.

अमरावती में दोस्ती को समर्पित
शिव महापुराण कथा
२३ से २९ सितंबर तक

विदर्भ स्वाभिमान, २५ सितंबर

अमरावती–स्वार्थ भरी इस दुनिया में आज जहां सगे नाते रिश्ते आज के दौर में जहां महत्वहीन हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर दोस्ती का एक रिश्ता ऐसा होता है अगर यह इमानदारी से निभाया जाए तो समुचित दुनिया में इसके जैसा रिश्ता नहीं होता है. इसी तरह का एक मामला सामने आया है जहां अपने बिछड़े मित्र की याद में वीएनके मार्निंग ग्रुप तथा जयभोले ग्रुप द्वारा शहर के प्राचीन गडगडेश्वर मंदिर में २३ से २९ सितंबर तक भव्य शिव महापुराण कथा का आयोजन किया गया है. आम तौर पर जग के कल्याणकर्ता भगवान शिव की कथा जनकल्याण तथा परिवार कल्याण के लिए कराई जाती है लेकिन अमरावती के इतिहास में पहली बार अपने जिगरी मित्र स्व.विनोद खुळसाम और स्व. हिंगूसेठ चावरे की स्मृति में यह कथा आयोजित करने के चलते इस कथा को लेकर शहरवासयों में अपार उत्साह है. कथा की सफलता के लिए पूरी अंबा नगरी और अन्य का भी सहयोग मिल रहा है.

स्व.रंजीत उर्फ इंगोसेठ चावरे

स्व.विनोद खुळसाम

इस कथा की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इस शिव पुराण महा कथा के प्रवक्ता महाकाल की नगरी उज्जैन जिले के उन्हेल के गोलोक धाम गौशाला के संचालक और भगवान भोलेनाथ के अनन्य भक्त पंडित शिव गुस् जी भक्तों को शिव महापुराण कथा का रसपान कराएंगे. आडंबर से दूर रहने वाले तथा भगवान भोलेनाथ की सेवा में सदैव रत रहने वाले पंडित शिव गुरूजी द्वारा इस कथा से प्राप्त राशि का उपयोग को लोक धाम स्थित गौशाला में गौ माता के लिए की जाएगी. कथा को लेकर जिस तरह की तैयारी वीएनके ग्रुप द्वारा की जा रही है उसके चलते यह शिव कथा निश्चित तौर पर प्राचीन गडगडेश्वर महादेव मंदिर के इतिहास में अपना अलग स्थान बनाएगी. कहते हैं दोस्ती में कभी कोई ऊंचा नीचा नहीं होता, कभी कोई बड़ा छोटा नहीं होता, जिस तरह से भगवान श्री कृष्ण और सुदामा की दोस्ती को आज भी लोग सम्मान के साथ याद करते हैं और दोस्ती की मिसाल देते हैं. मित्र की याद में महादेव मंदिर में आयोजित यह शिव पुराण कथा और इसमें पधारने वाले कथा प्रवक्ता शिव गुस् जी महाराज गौ माता के अनन्य भक्त रहने के कारण निश्चित तौर पर यह कथा दोस्ती के समर्पण का जहां मिसाल साबित होगी, वहीं दूसरी ओर इस कथा के माध्यम से पावन अंबा नगरी में सड़क दुर्घटनाओं में घायल तथा दूध नहीं देने वाली सैकड़ो गौ माता की सेवा का मौका अमरावती वासियो को मिलेगा. कहते हैं अगर इरादे नेक है तो भोलेनाथ का आशीर्वाद अपने हर भक्त को मिलता है. इस शिव पुराण कथा की सफलता के लिए जिस तरह से ग्रुप के सभी सदस्य, जय भोले ग्रुप और मित्र परिवार लगा हुआ है उसके मद्देनजर अमरावती में अभी तक हुई विभिन्न कथाओं से यह कथा पूरी तरह से जुदा रहने का विश्वास भगवान भोलेनाथ के अनन्य भक्त और दोनों ग्रुप के सभी साथियों ने व्यक्त किया है. इससे पूर्व कथा आरंभ होने से पूर्व २३ सितंबर को महिलाओं की भव्य कलश यात्रा निकलेगी में. कलश यात्रा में हजारों की संख्या में महिलाओं से शामिल होने और पुण्य लाभ लेने का आग्रह भोलेनाथ के भक्तों ने किया है.

वीएनके मॉर्निंग ग्रुप एचव्हीपीएम और जय भोले परीवार गडगडेश्वर महादेव मंदिर के साथियों की पहल

संत भक्त शर्मा परिवार

शास्त्र कहते हैं कि संत और भगवान, गौमाता की सेवा का भाग्य सभी के नसीब में नहीं होता है. ले कि न आशीष संपतजी शर्मा परिवार सचमुच भाग्यशाली परिवार है, जिनके घर पीढ़ियों से संत–महात्माओं की सेवा का पुण्य मिला है. कथा प्रवक्ता पं.शिव गुरूजी महाराज उनके ही यहां रूकने वाले हैं. इसकी आत्मीयता से व्यवस्था शर्मा परिवार कर रहा है. गुरुजी के रहने,प्रसाद की सभी प्रकार की व्यवस्था तथा कथा मे आने जाने की वाहन की व्यवस्था यह सब आशिष शर्मा ने ही की है. शहर में या नगर में किसी प्रकार की कथा या प्रवचन होता है उस कथा में आनेवाले कथावाचक की पुरी व्यवस्था आशिष शर्मा ही करते हैं. पीढ़ियों से यह पुण्य का महान कार्य शर्मा परिवार द्वारा किया जा रहा है. विदर्भ स्वाभिमान परिवार का करोड़ों साधुवाद है. धन्य है शर्मा परिवार और आदर्श संस्कार.यह काम उनके चाचाजी नरुसेठ पिताजी और दादाजी के समय से उनके परिवार में हो रहा है

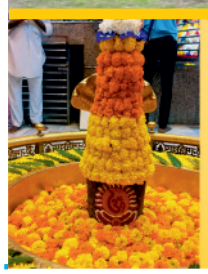

महाशिवपुराण कथा में पधारनेवाले
भक्तों का स्वागत एवं शुभकामनाएं...!

संपादकीय .....

महाकल्याणकारी हैं हमारे महादेव

ॐ नमः शिवाय के पंचाक्षर से होते हैं प्रसन्न

देवादिदेव महादेव की भक्ति बड़े भाग्य से मिलती है. यह भोलेनाथ हैं, जो अल्प पूजा–अर्चना में ही प्रसन्न होकर भक्तों को सबकुछ प्रदान करते हैं. कहते हैं कि कोई आडंबर इन्हें पसंद नहीं है. केवल दिल से भक्तिभाव चाहते हैं. भाव अगर अच्छा है तो भक्त को फल देने में सुस्ती नहीं करतेहैं. एक लोटा जल और बेल पत्र चढ़ाने मात्र से मेरे भोलेनाथ प्रसन्न हो जाते हैं. इनकी आराधना करते हुए जीवन को धन्य करने का प्रयास हर मानव को करना चाहिए.भोलेनाथ की कृपा जिस पर हो जाए वह कभी किसी भी स्थिति में परेशान नहीं होता है. समभाव पैदा होकर सुख हो या दु:ख सभी में समान भाव से रहता है. इसका अनुभव वही लोग कर सकते हैं, जिन्होंने जीवन में भोलेनाथ को दिल से अपनाया है.जो बिना किसी तरह की अपेक्षा किए भोलेनाथ को अपनाते हैं, भोलेनाथ सदैव उनका साथ निभाते हैं.

कहते हैं कि दुनिया में विश्वास से बड़ी कोई बात नहीं होती है. चाहे वह इन्सानी रिश्ते में हो या प्रभु की भक्ति की हो. जो लोग प्रभु को अपनाते हैं, अपने इष्टदेव को अपनाते हैं, उन्हें वैसा ही फल मिलता है और जो लोग प्रभु की निंदा करते हैं, उन्हें भी उनके कर्मों का फल मिलता है. प्राचीन गड़गड़ेश्वर महादेव मंदिर को पवित्र के साथ ही जागृत मंदिर के रूप में भी माना जाता है. हजारों ऐसे भक्त यहां से जुड़े हैं, जो न जाने कितने वर्षों से जुड़े हैं और भोलेनाथ की कृपा का अनुभव करते हुए अपने जीवन को धन्य कर रहे हैं. ओम नमः शिवाय का पंचाक्षर शक्तिशाली है. लेकिन दिखावे के लिए नहीं बल्कि दिल से इसका जाप किया जाना चाहिए. विश्वास जिन्हें होता है, उन्हें ही अनुभव आता है. पृथ्वी की सम्पूर्ण शक्ति इसी पंचाक्षर मंत्र में ही समाहित है. त्रिदेवों में ब्रह्म देव सृष्टि के रचयिता है, तो श्री हरि पालनहार हैं, भगवान भोलेनाथ संहारक. शिव तो आशुतोष हैं, जल्द ही प्रसन्न हो जाते है.शिव के साथ जब तक शक्ति है तभी तक वो शिव कहलाते है, बिना शक्ति के शव के समान हो जाते है. उनका अर्धनारीश्वर रूप इसी बात का प्रतीक है. अपने इस रूप से प्रभु सबको ये सीख देना चाहते है, कि प्रकृति (स्त्री) और पुरुष दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे होते हैं और साथ मिलकर ही सम्पूर्ण होते है. किसी की भी महत्ता कम नहीं है अपितु समान है.

महादेव अपने परिवार, पार्वती, श्रीगणेश और कार्तिकेय के साथ कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं. साथ ही नंदी, शिवगण आदि भी उनके साथ वहां पर निवास करते हैं.भगवान शिव के कई नाम हैं और वो योग और नृत्य सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं के देवता हैं. हिंदू धर्म में जो लोग उनका अनुसरण करते हैं उन्हें शैव कहा जाता है. एवं उनके सम्प्रदाय को शैव सम्प्रदाय कहते हैं.

भगवान शिव को दुनिया के विध्वंसक के रूप में जाना जाता है, लेकिन उनकी कई अन्य भूमिकाएँ भी हैं. हिंदू धर्म के अनुसार शिव के अनंत रूप हैं; जैसे वो निर्माता है तो विध्वंसक भी, आंदोलन हैं तो शांति भी, वो प्रकाश है, तो अंधेरा भी, और आदमी भी वही और औरत भी वही हैं. इन भूमिकाओं में विरोधाभास होता है लेकिन शिव की ये भूमिकाएँ यह दिखाने के लिए हैं कि ये चीजें जितना दिखाई देती हैं, उससे कहीं अधिक एक–दूसरे से जुड़ी हैं.शिव महा कल्याण कारी है. वो तो केवल एक लोटे जल से ही खुश हो जाते हैं. शिव आदिदेव है. शिव के स्मरण मात्र से ही सब दुख दूर हो जाते है. वो तो भोले नाथ है, जो भक्त उन्हे डंडे से मारता है, उससे भी खुश हो जाते है. जहां वो एक ओर महायोगी है, वहीं दूसरी तरफ माता पार्वती से प्रेम विवाह भी किया है. जब भी किसी जोड़े को आशीर्वाद दिया जाता है, तो उन्हें शिव–पार्वती की उपमा से ही सुशोभित किया जाता है.

इंद्रपुरी है भगवान श्री कृष्ण के चरणों से पावन नगरी

अमरावती एक प्राचीन शहर है.सुंदरता और विविधता से भरे इस प्राचीन शहर के इतिहास पर नजर डालें तो हमें पता चलेगा कि इस शहर में पहले से ही आध्यात्मिक और धार्मिक माहौल था.अमरावती को इंद्र की नगरी भी कहा जाता है. प्राचीन काल में इसका नाम इन्द्रपुरी था. इस प्राचीन शहर में माताखिड़की क्षेत्र में पुराने अमरावती अंबागेट के अंदर भगवान कृष्ण का एक बहुत ही भव्य मंदिर है. इस मंदिर में भगवान कृष्ण ने निवास किया था. संक्षेप में कहें तो उनके चरण इस मंदिर को छूने के कारण इस मंदिर को भगवान कृष्ण के चरण मंदिर कहा जाता है. कई लोगों का मानना है कि इस शहर में साक्षात भगवान कृष्ण आए थे. इंद्रपुरी के इस मंदिर में भगवान कृष्ण न केवल आए बल्कि तीन दिनों तक रुके भी.श्रीमद्भागवत कथा में भगवान श्रीकृष्ण के रुक्मिणी स्वयंवर की कथा का उल्लेख मिलता है. यह कथा शुक ऋषि ने राजा परीक्षित को सुनाई है.

उस कथा में ऋषिवर कहते हैं कि विदर्भ देश में भीमक नाम के एक पराक्रमी राजा थे. विदर्भ देश की राजधानी कुण्डिनपुर (अब कौडण्यपुर) थी और उस राज्य का क्षेत्रफल ५२ मील था. राजा भीमक की रानी का नाम सुधामती था. राजा भीमक और सुधामती के पांच बेटे और एक खूबसूरत बेटी रूपमती थी.राजकुमारों के नाम क्रमशः रुक्मी, रुक्मबाहु, रुक्मीरथ, रुक्मकेश और रुक्मणि थे और राजकुमारी रुक्मिणी थीं.वह अत्यंत सुंदर, रूपवती, सुंदर थी. सद्गुणों से परिपूर्ण रुक्मिणी महालक्ष्मी के समान महकने लगती थीं. जैसे–जैसे रुक्मिणी उम्र से बड़ी होती गई उनकी सुंदरता मैं और अधिक निखार आता गया.राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह करने के बारे में घर में सोच विचार शुरू हो गया. राजा भीमक ने सबसे बड़े राजकुमार रुक्मी से शाही परिवार के रीति–रिवाजों और परंपराओं के अनुसार बेटी की विवाह की तैयारी में लगने को कहा. इसके लिए स्वयंवर का आयोजन करने पर जोर दिया. इस स्वयंवर में राजकुमार रुक्मिणी का विरोध करके उन्होंने अपने पिता से जिद की कि राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह चैतदेश के राजा शिशुपाल से कर दिया जाये. बेटे के दबाव के आगे राजा भीमक को मजबूरी में यह फैसला मान लेना पड़ा. जबकि माता रूकमणि मन ही मन भगवान श्री कृष्ण को अपना पति मान चुकी थीं. इधर राजकुमारी रुक्मिणी के मन में कुछ अलग ही हलचल मची थी.

लेकिन उसने अपना दिल भगवान कृष्ण पर लगा दिया था. राजा शिशुपाल के साथ शादी उन्हें कतई मंजूर नहीं थी.

सौ.लता रविकांत कोल्हे, अमरावती

इसके लिए रुक्मिणी ने सुदेव नामक ब्राह्मण को भगवान श्रीकृष्ण के नाम एक पत्र दिया. इस पत्र में उन्होंने चक्रवर्ती भगवान श्रीकृष्ण की प्रशंसा की थी और उनसे अनुरोध किया था कि वे शिशुपाल से विवाह नहीं करना चाहती और भगवान श्री कृष्ण उनकी रक्षा करें. अत: हमें अम्बा नगर में आकर वहां से मेरा हरण कर ले.इस पत्र में यह भी लिखा था कि हमारी परंपरा के अनुसार, दुल्हन को शादी से एक दिन पहले कुलदेवत (आदिशक्ति अंबादेवी) के दर्शन करने होते हैं. कृपया निवेदन है कि आप अंबा नगर स्थित अंबा देवी के मंदिर में समय पर आएं.इस पत्र का उल्लेख श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध अध्याय ५३ में मिलता है. इस पत्र का अर्थ यह है कि हे कृष्ण, आप विवाह से एक दिन पहले विदर्भ देश में आएँ और मुझे ले जाएँ.आदिशक्ति अंबादेवी हमारी कुल देवी हैं.इस कथा में यह भी वर्णित है कि कुल की प्रथा के अनुसार जब मैं एक दिन पहले कुंडिनपुर से इंद्रपुरी की आदिशक्ति अंबादेवी के दर्शन करने आऊं तो वे यहां से उनका अपहरण कर ले. कुण्डिनपुर से आते समय रुक्मिणी के साथ सेवक, दासियाँ, पूजन सामग्री, चुनी हुई रिश्ते की स्त्रियाँ, चुने हुए वीर सैनिक होंगे.योजना के अनुसार राजकुमारी रुक्मिणी आदिशक्ति माता अंबादेवी के मंदिर में दर्शन के लिए आये. अंबादेवी की पूजा करने के बाद वह मंदिर से बाहर आईं. सभी मेहमान उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे. अतिथियों में शिशुपाल, जरासंध, श्रीकृष्ण, रुक्मी अपने–अपने रथों पर सवार थे. राजकुमारी रुक्मिणी ने चक्रवर्ती भगवान श्रीकृष्ण को पहचान लिया और उनके रथ के पास पहुँचीं. तब भगवान श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हाथ अपने हाथ में लिया और उन्हें रथ में बैठा लिया और हजारों सैनिकों की उपस्थिति में उनका हरण कर लिया. राजकुमारी रुक्मिणी की हार के बाद, राजकुमार रुक्मी ने अपने सैनिकों के साथ भगवान कृष्ण का पीछा किया. दोनों ही सेना के बीच आमने–सामने मुकाबला हुआ और श्री कृष्ण जीत गए. इसमें रुक्मी को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा. हार के बाद रुक्मी कौडण्यपुर वापस नहीं गया बल्कि उसने भातकुली में एक नया शहर बसाया और वहीं बस गया. माताखिडकी में जिस मंदिर में भगवान कृष्ण ने निवास किया था, वहां महानुभाव संप्रदाय के लोग आज भी महानुभाव परंपरा के अनुसार पूजा करते हैं. महाराष्ट्र के अमरावती में भगवान कृष्ण का यह एकमात्र मंदिर है, जहां भगवान तीन दिनों तक रुके थे.महानुभाव पंथ में पंचकृष्ण की पूजा की जाती है. उनमें मुख्य रूप से चक्रवर्ती भगवान कृष्ण, श्री दत्तात्रय प्रभु, श्री चक्रपाणि महाराज, श्री गोविंद प्रभु महाराज और सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी शामिल हैं. लीला जीवनी में उल्लेख है कि श्री गोविंद प्रभु महाराज आठ सौ वर्ष पूर्व इस मंदिर में आये थे. भगवान श्री कृष्ण के चरणों से पावन यह मंदिर न केवल अमरावती बल्कि देश भर के लाखों श्री कृष्ण भक्तों के आस्था स्थल के रूप में सुख्यात हो रहा है.

(साभार – का.बापूसाहेब कारंजकर एवं डॉ.अशोकराव राऊत द्वारा लिखित अमरावती शहर का इतिहास)

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881 मोबाइल नं.-*09423426199,8855019189/8208407139*

E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी वीएनके ग्रुप मित्रों द्वारा मित्र को आदर्श सुमनांजलि का प्रयास

शहर में सामाजिक और धार्मिक कामों में अग्रणी ग्रुप के रूप में वीएनके ग्रुप ने अपना स्थान बनाया है. वीएनके ग्रुप द्वारा २३ सितंबर से २९ सितंबर तक अमरावती के प्राचीन शिव मंदिर गडगाडेश्वर में अत्यंत भव्य एवं दिव्य शिव महापुराण कथा का आयोजन किया गया है.गडगडेश्वर महादेव मंदिर प्राचीन मंदिर है जहां लगातार क्षसद्राभिषेक, पूजा, अर्चना जप किया जाता है. इससे यह भूमि पवित्रता के साथ ही जागृत हो गई है. श्रावण मास में सुबह तीन बजे से रात दस बजे तक अलग-अलग भोलों के समूह द्वारा रुद्राभिषेक किया जाता है. इस मंदिर के मामले में कई लोगों की आस्था और विश्वास मेल खाता है.

शिव महापुराण कथा का आयोजन कोई आसान काम नहीं है. लेकिन जब शिवभक्त प्रवीण बुंदिले ने यह मुद्दा हमारे वीएनके ग्रुप के पास उठाया, उस समय सभी ने एक स्वर से शिव महापुराण कथा का शिव धनुष उठाने का निश्चय किया.हर श्रावण माह में, हम प्रवीण के माध्यम से अभिषेक और प्रसाद के लिए गडगडेश्वर महादेव मंदिर जाते थे. प्रवीण के पास शिव भक्तों का एक समूह है, जिसे जय भोले ग्रुप कहा जाता है. और उसके माध्यम से प्रवीण श्रावण पूरे एक महीने तक सुबह ५ बजे से ७:३० बजे तक अभिषेक और पूजा करते हैं.भक्तिभाव के साथ वे पुलिस में अपनी सेवा को भी उतना ही महत्व देते हैं.उनकी भक्ति से लगभग सभी परिचित हैं.उनके भक्तिभाव के साथ ही कर्मठता ने हमें भी सेवा के लिए प्रेरित किया. इन सभी सामाजिक और धार्मिक कार्यों का श्रेय हमारे वीएनके ग्रुप के संस्थापकों और पूर्व ड्रग एंड नारकोटिक्स कमिश्नर विनोद खुळसाम और हिंगूसेठ चावरे को जाता है. क्योंकि यह वीएनके ग्रुप उन्हीं की वजह से स्थापित हुआ था. उन्होंने श्री हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल में सुबह की सैर के लिए आने वाले लोगों में सामाजिक कार्यों के प्रति रुचि पैदा की. अपने मधुर एवं दयालु स्वभाव के कारण वे सुबह की सैर पर आने वाले लोगों को अपने साथ जोड़ लेते थे. इनमें महिला-पुरुषों के साथ-साथ युवा भी थे. उन्होंने अपना ग्रुप बनाया और उसके जरिए जन्मदिन और सामाजिक गतिविधियां शु डिग्री कीं. फिर जन्मदिन के अवसर पर गौशाला को विभिन्न प्रकार का दान, महेंद्रभाऊ और अजयभाऊ दातेराव के रक्तदान शिविर के माध्यम से रक्तदान, गरीब सड़कों पर गरीब लोगों को भोजन दान और आदिवासी आश्रम आश्रम स्कूल के बच्चों को कंबल वितरण सहित सेवा के अनेक प्रकल्प चलाते थे और प्रेरित करते थे.पिछले दो वर्षों से गांधी चौक पर शिव महापुराण कथा का आयोजन किया जाता था और प्रवीण उस कार्यक्रम में नियमित रूप से शामिल होते थे. उनके मन में भी यह भावना घर कर गयी कि हमें भी अपने वीएनके ग्रुप के माध्यम से शिव महापुराण की कथा का आयोजन करना चाहिए. लेकिन लागत और बजट को देखते हुए हिम्मत नहीं हो रही थी. आखिरकार प्रवीण ने यह मामला हमारे ग्रुप तक पहुंचाया. और समूह हाथों-हाथ सहमत हो गया.इस पुण्य तथा मित्रता को समर्पित कथा में सभी की हामी को सभी ने भोलेनाथ की मर्जी समझा और लग गए काम से.शिवपुराण कथा करना कोई आसान बात नहीं है. उसके लिए भक्ति भी चाहिए और लगाव भी चाहिए. लेकिन वीएनके ग्रुप के लिए ये चीज़ आसानी से हासिल हो गई.वास्तव में हम सभी शिवभक्त प्रवीण बुंदेले के साथ रहते हुए कब शिवभक्त बन गए, हमें पता ही नहीं चला. वीएनके ग्रुप विभिन्न सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों का एक समूह है. कोई भी सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, स्वास्थ्य, प्रशासनिक मामला हो, समूह का हर व्यक्ति एक-दूसरे की मदद के लिए दौड़ पड़ता है.यह आत्मीयता और सभी सदस्यों के सुख-दुःख का साथी ग्रुप बना है, जिस पर हर सदस्य गर्व करता है.

प्रा.डॉ.रविकांत कोल्हे
इंडीपेंडेन्ट डायरेक्टर, गेल इंडिया ली.

शिव महापुराण कथा के बारे में कुछ जानकारी-हिंदू संस्कृति में कई पुराणों के बारे में कहा जाता है, इन सभी पुराणों में से एक पुराण है शिव पुराण. इस विशाल सृष्टि की शून्यता को हम शिव कहते हैं. वह निर्गुण, निराकार, असीम और शाश्वत है. मनुष्य इसके आकार-प्रकार से परिचित है. लेकिन वह आदि है और अनंत है. हमारी संस्कृति में भगवान शंकर, शिव के अनेक रूपों की कल्पना की गई है. इनका स्वरूप अत्यंत गूढ़, समझने में कठिन, भोले शंकर, मंगलकारी शम्भो, वेदों, शास्त्रों के गुस्, आसानी से क्षमा करने वाले आशुतोष, स्थिर अचलेश्वर, नटराज

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संकटमोचन हनुमानजी को हैं और पांच भाई

हनुमानजी हिन्दू धर्म में ३३ करोड़ देवी-देवता होने की बात कही जाती है, दरअसल वह ३३ करोड़ नहीं वरन ३३ कोटि देवी-देवता हैं. यानि कि उन्हीं देवी-देवताओं के विभिन्न रूप एवं अवतार हैं. अब स्वयं देव हों या उनके कोई मानव रूपी अवतार, सभी से जुड़े तथ्य एवं पौराणिक वर्णन काफी दिलचस्प हैं.रोचक जानकारी आज हम हनुमान जी के बारे में आपको कुछ रोचक जानकारी देंगे. बजरंगबली, पवन पुत्र, अंजनी पुत्र, राम भक्त, ऐसे ही कई नामों से पुकारा जाता है हनुमान जी को. यह बात शायद सभी जानते हैं लेकिन आगे बताए जा रहे कुछ तथ्य हर कोई नहीं जानता.

भगवान शिव का अवतार सबसे पहली बात, हनुमान जी को भगवान शिव का ही अवतार माना जाता है. एक पौराणिक कथा के अनुसार अंजना नाम की एक अप्सरा को एक ऋषि द्वारा यह श्राप दिया गया कि जब भी वह प्रेम बंधन में पड़ेगी, उसका चेहरा एक वानर की भांति हो जाएगा. लेकिन इस श्राप से मुक्त होने के लिए भगवान ब्रह्मा ने अंजना की मदद की.अंजनी पुत्र उनकी मदद से अंजना ने धरती पर स्त्री रूप में जन्म लिया, यहां उसे वानरों के राजा केसरी से प्रेम हुआ. विवाह पश्चात श्राप से मुक्ति के लिए अंजना ने भगवान शिव की तपस्या आरंभ कर दी. तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें वरदान मांगने को कहा. अंजना ने भगवान शिव को कहा कि साधु के श्राप से मुक्ति पाने के लिए उन्हें शिव के अवतार को जन्म देना है, इसलिए शिव बालक के रूप में उनकी कोख से जन्म लें.शिव आराधना तथास्तु कहकर शिव अंतर्ध्यान हो गए, इस घटना के बाद एक दिन अंजना शिव की आराधना कर रही थीं और इसी दौरान किसी दूसरे कोने में महाराज दशरथ, अपनी तीन रानियों के साथ पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए यज्ञ कर रहे थे.

अंजना के हाथ में गिरा प्रसाद अग्नि देव ने उन्हें दैवीय पायस दिया जिसे तीनों रानियों को खिलाना था लेकिन इस दौरान एक चमत्कारिक घटना हुई, एक पक्षी उस पायस की कटोरी में थोड़ा सा पायस अपने पंजों में फंसाकर ले गया और तपस्या में लीन अंजना के हाथ में गिरा दिया.शिव का प्रसाद अंजना ने शिव का प्रसाद समझकर उसे ग्रहण कर लिया और कुछ ही समय बाद उन्होंने वानर मुख वाले एक बालक को जन्म दिया. बहुत कम लोग जानते हैं कि इस बालक का नाम मारूति था, जिसे बाद में हनुमान के नाम से जाना गया.अन्य कथा हनुमान जी से जुड़ा एक और तथ्य काफी रोचक है. एक कथा के अनुसार एक बार हनुमान जी ने श्रीराम की याद में अपने पूरे शरीर पर सिंदूर भी लगाया था. यह इसलिए क्योंकि एक बार उन्होंने माता सीता को सिंदूर लगाते हुए देख लिया. जब उन्होंने सिंदूर लगाने का कारण पूछा तो सीता जी ने बताया कि यह उनका श्रीराम के प्रति प्रेम एवं सम्मान का प्रतीक है.लाल हनुमान बस यह जानने की देरी ही थी कि हनुमान जी ने अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया, यह दर्शाने के लिए कि वे भी श्रीराम से अति प्रेम करते हैं. इस घटना के बाद हनुमान का लाल हनुमान रूप भी काफी प्रचलित हुआ.हनुमान शब्द का संस्कृत अर्थ हनुमान जी से जुड़े कुछ छोटे-छोटे तथ्य हैं, जो काफी कम लोग जानते हैं. जैसे कि उनका नाम, हनुमान शब्द का यदि संस्कृत अर्थ निकाला जाए तो इसका मतलब होता है जिसका मुख या जबड़ा बिगड़ा हुआ हो.हनुमान और भीम अगली बात जो हम बताने जा रहे हैं उसे जान आप वाकई हैरत में पड़ने वाले हैं. महाभारत काल में पाण्डु पुत्र राजकुमार भीम अपने बल के लिए जाने जाते थे. कहते हैं वे हनुमान जी के ही भाई थे.

ब्रह्मचारी हनुमान इसके अलावा जिन हनुमानजी को ब्रह्मचारी कहा जाता है, उनकी शादी भी हुई थी. उनके पुत्र का नाम मकरध्वज है. लेकिन इसके अलावा उनके पांच भाई भी थे, क्या आप जानते हैं?हनुमान जी के पांच सगे भाई जी हां... हनुमान जी के पांच सगे भाई थे और वो पांचों ही विवाहित थे. यह कोई कहानी या मात्र मनोरंजन का साधन बनाने के लिए हवा में बताई गई बात नहीं है, बल्कि सच्चाई है. हनुमान जी के पांच सगे भाई थे, इस बात का उल्लेख ब्रह्मांडपुराण में मिलता है.ब्रह्मांडपुराण के अनुसार इस पुराण में भगवान हनुमान के पिता केसरी एवं उनके वंश का वर्णन शामिल है. बड़ी बात यह है कि पांचों भाइयों में बजरंगबली सबसे बड़े थे. यानी हनुमानजी को शामिल करने पर वानर राज केसरी के ६ पुत्र थे.सबसे बड़े थे बजरंगबली बजरंगबली के बाद क्रमशः मतिमान, श्रुतिमान, केतुमान, गतिमान, धृतिमान थे. इन सभी के संतान भी थीं, जिससे इनका वंश वर्षों तक चला. हनुमानजी के बारे जानकारी वैसे तो रामायण, श्रीरामचरितमानस, महाभारत और भी कई हिंदू धर्म ग्रंथों में मिलती है. लेकिन उनके बारे में कुछ ऐसी भी बातें हैं जो बहुत कम धर्म ग्रंथों में उपलब्ध है. ब्रमांडपुराण उन्हीं में से एक है. पिता केसरी का वंशज इस महान ग्रंथ में हनुमान जी के जीवन एवं उनसे जुड़ी कई बातें हैं. इसी ग्रंथ में उल्लेख है कि बजरंगबली के पिता केसरी ने अंजना से विवाह किया था.

धर्म सेवक चंद्रकुमार जाजोदिया

अमरावती शहर धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाता है. समाज सेवक तथा धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले चंद्र कुमार उर्फ लपपी भैया जाजोदिया समाज सेवक के साथ धर्म सेवक बन गए. वे जहां सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहते हैं वहीं अमरावती में पंडित प्रदीप मिश्रा की शिव महापुराण कथा हो या राम कथा हो इन कार्यों में सदैव उनके भरपूर योगदान रहता है. युवाओं में बढ़ती व्यसनाधीनता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पूरे महाराष्ट्र में १०८ कथाओं का खर्चा स्वयं उठाने का न केवल फैसला लिया बल्कि बल्कि अभी तक ६० से अधिक कथाएं हो चुके हैं. इन कथाओं में कथा प्रवक्ता युवाओं को व्यसन से दूर रहने तथा राष्ट्रहित में अपनी मेहनत के बलबूते स्वयं का स्थान बनाने और परिवार का नाम रोशन करने की सलाह देते हैं.

सामाजिक कामों में सदैव अग्रणी रहने वाले चंद्र कुमार जाजोदिया विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत में बताते हैं कि सेवा की सीख उन्हें अपने माता-पिता से ही मिली है. उनका कहना है कि मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना इस सिद्धांत पर सभी देशवासियों को चलते हुए भारत माता की ताकत बनने का कार्य करना चाहिए. युवा पीढ़ी को देश की सबसे बड़ी ताकत बताते हुए वह कहते हैं कि विश्व में जिन देशों ने भी प्रगति की है उन देशों की सबसे बड़ी ताकत वहां का युवा वर्ग रहा है. भारत को युवाओं का देश कहा जाता है लेकिन आज युवा पीढ़ी जिस तरह से विभिन्न व्यसनों में लीन हो रही है, उसके कारण परिवार की सुख शांति जहां चल रही है वहीं दूसरी ओर युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्रीय हित में नहीं हो पा रहा है. युवा पीढ़ी को संस्कारित बनाने के लिए और उनका उपयोग राष्ट्रहित में करने के नेक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने राज्य भर में १०८ श्रीमद् भागवत कथाएं करवाने का संकल्प लिया है. वे केवल बोलने में विश्वास नहीं करते बल्कि अभी तक ६० से अधिक कथाएं राज्य के विभिन्न हिस्सों में हो चुकी हैं. कथा को लोगों का अपार प्रेम मिलने और युवाओं द्वारा व्यसन का त्याग करने का संकल्प लेने को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि बताने वाले चंद्र कुमार जाजोदिया का कहना है कि युवा पीढ़ी की ताकत का उपयोग बर्बादी नहीं बल्कि देश की प्रगति के लिए होनी चाहिए, इस कड़ी में सहयोग देने की भावना उनमें सदैव रहती है. गन गणेश्वर महादेव मंदिर में २३ सितंबर से जारी शिव महापुराण कथा को उन्होंने शुभकामनाएं देते हुए हजारों भक्तों से इस कथा का लाभ उठाने का आग्रह भी किया.

लाखों भक्तों का आस्थास्थल है व्यंकटेशधाम

जागृत है व्यंकटेश धाम– शहर को धार्मिक नगरीके रूप में जाना जाता है. यही कारण है कि अमरावती में बड़े से बड़े आयोजन जहां होते हैं, वहीं दूसरी ओर यहां की जनता भी धार्मिक है. संत-महात्माओं की पवित्र भूमि के साथ ही यहां पर कई मंदिरों की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर है. ऐसे ही मंदिरों में शामिल है जयस्तंभ चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थिति अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी, महालक्ष्मी माता तथा पद्मावती माता का मंदिर व्यंकटेशधाम. मंदिर का आधुनिकीरण किया गया है. इससे मंदिर जहां चमक रहा है, वहीं दूसरी ओर जागृत मंदिर रहने के कारण हर दिन हजारों की संख्या में भाविक भी यहां पहुंचकर गोविंदा का दर्शन कर जीवन धन्य कर रहे हैं. बालाजी के अनन्य भक्त स्व. रतनलाल दायमा को हुए साक्षात्कार से निर्मित इस मंदिर में आने वाले भक्तों ने स्वयं कई बार इसका अनुभव किया है. शुक्रवार को आरती में उमड़ने वाली भीड़ जहां मंदिर की लोकप्रियता तथा विश्वास का परिचायक है, वहीं दूसरी ओर हजारों शहर के ऐसे भक्त हैं, जिनकी

सुबह यहां पूजा-अर्चना और दर्शन से होती है और शयन आरती में भी शामिल होते हैं. कईयों के जीवन में यहां के दर्शन ने चमत्कार का जहां काम किया है, वहीं बड़ी संख्या में भक्तों का कहना है कि मंदिर में उन्हें दर्शन के बाद अपार सुकून की अनुभूति होती है. मंदिर के पुजारी तथा सभी कर्मचारी भी प्रभु सेवा समझकर सेवाएं देते हैं. मंदिर की साफ-सफाई से लेकर यहां सालभर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम होते हैं. इसमें भक्तों की भीड़ उमड़ती है.

मंदिर के सामने संकटमोचन हनुमानजी की भव्य मूर्ति भक्तों को जहां मुसीबत में भी नहीं घबराने की सीख देती है, वहीं रिद्धी-सिद्धि के दाता गणेशजी की आकर्षक मूर्ति भक्तों को सद्गुण सम्पन्न बनाती है. कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से चमत्कारी काम करने की ताकत आती है. जिन्हें विश्वास होता है, उन्हें इस मंदिर में उसका प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है. लेकिन नास्तिकों को विश्वास हो नहीं सकता है. जब मन चंगा तो कठोती में गंगा वाली उक्ति श्रद्धाभाव के मामले में लागू होती है. जिस तरह से हवा को महसूस किया जाता है, आक्सीजन हमें जिंदा रखता है लेकिन वह दिखाई नहीं देता है. उसी तरह दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है जो दुनिया का संचालन करती है. हमारे कर्मों का हिसाब-किताब करती है. अमरावती शहर ही नहीं तो विदर्भ में सुख्यात जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम लाखों भक्तों का आस्थास्थल बना हुआ है. व्यंकटेशधाम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एड.आर.बी. अटल के नेतृत्व में सभी सेवा समर्पित पदाधिकारियों तथा सेवाधारियों का प्रभु के प्रति समर्पण देखकर निश्चित तौर पर अपार हर्ष होता है. धार्मिकता के साथ ही मानवता के धर्म को बढ़ावा देने की पहल यहां होती है. अन्नदान जैसे कायक्रम निरंतर चलते हैं. मंदिर के हेडाजी, रामेश्वर भाऊ के साथ ही सभी कर्मचारियों की समर्पित भावना से सेवा निश्चित ही काबिले-तारीफ है. सभी पुजारियों द्वारा नित्य नियम से यहां पर पूजा-अर्चना, अभिषेक का काम किया जाता है. आरती में बड़ी संख्या में भाविक उमड़ते हैं. को मानवता की सेवा का आकार देते हुए अन्नदान जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं. मंदिर के संस्थापक स्व.रतनलाल दायमा भगवान बालाजी के अनन्य भक्तों में से एक थे. फिलहाल मंदिर की बेहतरीन जिम्मेदारी के निर्वहन में उनके बेटे रतनभैया, रमणभाई दायमा तथा गोविंदजी दायमा ने स्वयं को झोंक दिया है. (विदर्भ स्वाभिमान डेस्क)

भक्ति, सेवा, समर्पण का संगम है जय भोलेनाथ ग्रुप

देवाधिदेव महादेव की भक्ति की शक्ति का अनुभव ऐसे ही भक्तों को आता है जो समर्पण भाव से भोलेनाथ की भक्ति करते हैं. शहर के प्राचीन गडगडगणेश्वर महादेव मंदिर मैं भोलेनाथ के मोहक श्रृंगार के साथ उनकी सेवा की स्पर्धा लगती है. जय भोलेनाथ ग्रुप भोलेनाथ की सेवा के अलावा उनकी सजावट के लिए उपयोग में लाया गया बिस्किट, सब्जियों से प्रभु का श्रृंगार करने के बाद वह सब्जियां गौशाला को दान देने के साथ ड्राई फ्रूट से किया गया सिंगर भी जरूरतमंदों को बांट दिया जाता है. ग्रुप के सदस्यों द्वारा पिछले ४० वर्षों से महादेव की आराधना समर्पित भाव से की जा रही है. बच्चों से लेकर महिलाएं और जस्ट नागरिक भी इस कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं. भोलेनाथ की भक्ति और इससे जीवन में आए बदलाव का गौरवपूर्ण उल्लेख ग्रुप का हर सदस्य करता है. यह जब भी समय मिलता है भगवान भोलेनाथ की सेवा में लग जाते हैं. सभी में महादेव को लेकर समर्पण की भावना ही इस ग्रुप की कड़ी को लगातार मजबूत करती रही है. यह सभी २३ सितंबर से शुरू होने जा रही शिव महापुराण कथा को लेकर अत्यधिक उत्साहित हैं और अपना हर संभव योगदान देने के लिए तत्पर हैं. कथा में पधारने वाले सभी भक्तों का अंबा नगरी में हार्दिक स्वागत करने के साथ अधिक नागरिकों से कथा का रसपान कर अपना जीवन धन्य करने का आग्रह भी जय भोले नाथ ग्रुप द्वारा किया गया है.

पृष्ठ ३ से आगे

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी...

हैं. भगवान शंकर के जितने रूप हैं उतने ही हमारे जीवन के भी रूप हैं.यदि हम भगवान शंकर के शिव पुराण का अध्ययन करें, तो हम पाएंगे कि सापेक्षता का सिद्धांत, क्वांटम यांत्रिकी का सिद्धांत, संपूर्ण आधुनिक भौतिकी इसमें खूबसूरती से रखी गई है.यह एक तार्किक संस्कृति है. इसमें विज्ञान को कहानी के रूप में बताया गया है.

शिव पुराण चेतना को मानव स्वभाव के सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करेगा, विज्ञान है. योग को विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है. जिसकी कोई कहानी नहीं है.यदि हम शिव पुराण का गहराई से अध्ययन करें तो हमें पता चलता है कि योग और शिव पुराण अलग नहीं हैं. सनातन को मानने वाले और विज्ञान को मानने वाले दोनों के लिए शिव पुराण का मूल सिद्धांत एक ही है.शिव पुराण का पाठ शु डिग्री करने से पहले विघ्नहर्ता गणेश की पूजा जरूरी है. इसके बाद भगवान शिव और शिव पुराण की पूजा करनी चाहिए. शिव पुराण में भगवान शंकर की विभिन्न लीलाओं का वर्णन कथाओं में किया गया है. इसके अलावा शिव पुराण में भी भगवान शंकर की पूजा के व्रत और नियम बताए गए हैं. इसी में रहस्य भी बताया गया है. जिससे भगवान शंकर शीघ्र प्रसन्न होंगे और दुःख, दरिद्रता और संकट दूर करते हैं. शिव पुराण में भगवान शंकर के महात्म्य और उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं का वर्णन है. धार्मिक मान्यता यह भी है कि जो व्यक्ति शिवपुराण की कथा पढ़ता या सुनता है उसके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं. उनके परिवार पर भगवान शंकर की कृपा सदैव बनी रहती है.इसका अनुभव वही कर सकते हैं, जो निश्चल, निष्कपट भाव से भोलेनाथ को याद करते हैं.

ऐसा कहा जाता है कि भगवान शंकर का कोई गुस् नहीं था लेकिन वे संपूर्ण जगत के गुस् और निर्माता हैं.अगर आप भगवान शंकर को समझना चाहते हैं तो शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव का अर्थ है अविनाशी, साकार-निराकार स्वरूप और परमपिता.भगवान शंकर का एक और रूप है जिसे बहुआयामी, त्रिदेव, सृष्टिकर्ता, परम स्वतंत्र और मौलिक भगवान कहा जाता है. भगवान शंकर पंचमुखी सदाशिव हैं. और इन्हीं सदाशिव के पूर्ण अवतार भगवान शंकर हैं. जो कैलास पर्वत पर निवास करता है. अंतर केवल इतना है कि भगवान शंकर एक क्षणिक अभिव्यक्ति हैं जबकि शिव शाश्वत परमात्मा हैं. भगवान शंकर त्रिदेवों में सर्वश्रेष्ठ हैं.शिव सर्वोच्च शक्ति हैं. जो सभी देवताओं द्वारा वंदित है.

पद्म पुराण और शिव पुराण में वर्णन है कि सृष्टि के आरंभ से लेकर सृष्टि के अंत तक शिव ही रहेंगे.भगवान शिव भगवान विष्णु (रामनाम) का स्मरण करते हैं.

इसका कारण यह है कि शिव प्रलय कर्ता हैं. जिसका अर्थ है विध्वंसक. किसी भी चीज़ को नष्ट करने से पहले उन्हें यह जान लेना चाहिए कि जिसे नष्ट किया जाना है उसकी तैयारी भगवान विष्णु ने की है,जो स्वयं रचयिता है.संक्षेप में हम शिव पुराण महाकथा के माध्यम से भगवान शंकर की विभिन्न चीजों को जान सकते हैं. भगवान शंकर के शिव महापुराण को पढ़ना बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के समान है. कई स्थानों पर भगवान शंकर के मंदिर हैं. लेकिन ज्योतिर्लिंग का महत्व अलग है. ज्योतिर्लिंग वह स्थान है जहाँ शिव ज्वाला रूप में पिंडी में विराजमान हैं और चूंकि शेष शिवलिंग भक्तों द्वारा बनाया गया है, इसलिए इसकी पूजा करने का अर्थ आध्यात्मिक सुख और संतुष्टि प्राप्त करना है. प्रत्येक मनुष्य मोक्ष चाहता है और वह मोक्ष केवल ईश्वरभक्ति में ही प्राप्त होता है. देवाधिदेव महादेव सभी देवताओं में सबसे महान हैं इसलिए उनकी पूजा करने का अर्थ है अपने परिवार का कल्याण करना.

हमारे धर्मग्रंथ (वेद, पुराण, उपनिषद) अनंत ज्ञान के भंडार हैं. और इसका अध्ययन करके हमें अपने आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाना चाहिए. महाशिवपुराण कथा में इसमें मानव कल्याण का मार्ग छिपा है इसलिए सभी को शिव महापुराण कथा पढ़नी या सुननी चाहिए.इससे सुख,समृद्धि,सफलता के साथ ही यश की वृद्धि होती है. शिव पुराण कथा को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

गौ माता की पवित्र भूमि बन गया है गोलोक धाम

हजारों भक्त रोज करते हैं गौ माता के दर्शन
शिव शर्मा महाराज गौ सेवा को बताते हैं ईश्वर सेवा

महाकाल के कारण न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में प्रसिद्ध रहने वाले उज्जैन जिले की उन्हेल तहसील में श्री राम कथा तथा शिव महापुराण कथा करने वाले जाने-माने कथाकार शिव शर्मा द्वारा संचालित गोलोक धाम सचमुच ही गौ माता के चरणों से पावन तीर्थ स्थल बनता जा रहा है. सनातन धर्म में गौ माता का कितना महत्व है यह हर धार्मिक व्यक्ति अच्छी तरह से जानता है. कहां जाता है कि अगर गौ माता की सेवा ईमानदारी से की जाती है तो इंसान के जीवन में दुख दरिद्र जहां नष्ट होता है वही दूसरी ओर उसके जीवन में तमाम प्रकार की खुशियां आती हैं. करोड़ देवी देवताओं की पूजा अर्चना का पुण्य गौ माता की सेवा करने से हो जाता है.

पूज्य महाराज जी जहां स्वयं गौ माता के अनन्य भक्त हैं वहीं ४०० से अधिक गौ माता की सेवा का सौभाग्य उन्हें प्राप्त होता है. वह बताते हैं कि जीवन में जीव दया का अपार महत्व होता है. वैसे तो किसी भी जीव को तकलीफ नहीं देनी चाहिए लेकिन गौ माता का स्थान अलग है. समस्त प्राणियों में माता का दर्जा केवल गौ माता को दिया गया है. गोलोक धाम में रोज सैकड़ो भक्त आते हैं और गौ माता के दर्शन कर अपने जीवन को जहां धन्य करते हैं वहीं गुरुजी बताते हैं कि गोलोक धाम की स्थापना से लेकर अभी तक जन सहयोग से भगवान भोलेनाथ की कृपा से गौ माता की सेवा जारी है. वे कहते हैं कि भगवान भोलेनाथ गौ माता के पालक रहने की बात शास्त्रों में कही गई है. सती पार्वती से अलग होने के बाद गौ माता का पालक भगवान भोलेनाथ ने संभाल लिया था, इसके लिए ही उन्होंने गोलोकधाम की स्थापना की. इसका प्रमुख उन्होंने साक्षात भगवान विष्णु का रूप भगवान श्री कृष्ण को बनाते हुए समस्त संसार के समक्ष गौ माता की सेवा का क्या महत्व होता है इसका आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया. भगवान भोलेनाथ की अनन्य भक्त शिव शर्मा महाराज भी गौ माता की सेवा में पूरा जीवन समर्पित किया है. यहां गंभीर रूप से घायल गौ माता की उपचार और सेवा का बेहतरीन प्रबंध किया गया है. जीवन में खुशहाली लाने के लिए हर व्यक्ति को गोलोकधाम गौशाला का एक बार अवश्य दर्शन करते हुए अपना जीवन धन्य करने का प्रयास करना चाहिए.

वीणा सुभाषचंद्र दुबे
मुख्य प्रबंधक, विदर्भ स्वाभिमान
अमरावती ८८५५०१९१८९

रक्तदान के भगीरथ हैं यह

अमरावती जिला धार्मिक और रक्त सेवा के लिए पूरे देश में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है. अमरावती रक्तदान समिति के प्रमुख महेंद्र भूतड़ा, अजय दातेराव, पिंटू शर्मा के साथ ऐसे सैकड़ो पदाधिकारी और सदस्यों की कड़ी के साथ समिति ने जिस तरह से रक्तदान आंदोलन को पूरे देश में चमकाया है उसके लिए सभी पदाधिकारी का अभिनंदन किया जाना चाहिए. बोले तैसा चाले के सिद्धांत पर चलते हुए स्वयं तीनों ने

अभी तक कई दर्जन भर रक्तदान करते हुए गरीब मरीज की जीवन बचाने का कार्य किया है. अमरावती शहर को इन तीनों पर और पूरी समिति को अभी तक कई पुरस्कार राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के प्राप्त हो चुके हैं. पिंटू भैया शर्मा ने अभी तक जनहित में १५५ बार रक्तदान करते हुए जहां लोगों की जिंदगी बचाई है वहीं दूसरी ओर महेंद्र भूतड़ा और अजय दातेराव पूरी समिति का कार्य अंबा नगरी की शान में चार चांद लगाने वाला है. रक्तदान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाते हुए अमरावती की शान को बढ़ाने का कार्य अमरावती रक्तदान समिति तथा इसके योद्धाओं द्वारा किया गया है. शिव महापुराण कथा को समिति ने हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अधिकाधिक संख्या में भक्तों से इस कार्यक्रम का लाभ लेने का आग्रह किया है.

समिति ने अभी तक ६००० रक्तदान शिविरों के माध्यम से ४००००० यूनिट से अधिक रक्त जमा कर जरूरतमंदों को पहुंचकर जीवन दान के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है. महेंद्र भूतड़ा ने २२४, अजय दातेराव ने १४८ तथा पिंटू शर्मा ने १५५ बार रक्तदान कर रक्तदान अभियान को व्यापक बनाने में अभूतपूर्व कार्य किया है.

भक्तिभाव से सदाचरण

हर व्यक्ति के जीवन में आदर्श संस्कार, आदर्श अचार विचार का महत्वपूर्ण स्थान होता है. भक्ति की शक्ति जहां महान होती है वहीं दूसरी ओर भक्ति भाव करने वाला व्यक्ति कभी किसी बुराई का साथी नहीं बनता है. पूजा अर्चना के साथ हमारे शुद्ध विचार आदर्श होते हैं. देवाधिदेव महादेव अल्प भक्ति में प्रसन्न होकर भक्त को आशीर्वाद देने वाले देव हैं. शिव महापुराण कथा सुनने का पुण्य अवसर गौ माता के सेवक उन्हेल के पंडित शिव शर्मा की वाणी से सुनने का मौका २३ सितंबर से मिल रहा है. कार्यक्रम को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं. शिव महापुराण कथा कहने और सुनने मात्र से जीवन धन्य हो जाता है.

शिव पुराण का महत्व इस बात में है कि यह शैव मत का पवित्र ग्रंथ है और इसमें भगवान शिव की महिमा का वर्णन है. कथा सुनने से क्या पुण्य मिलता है इसका उल्लेख विभिन्न शास्त्रों में भी किया गया है. शिव पुराण में भगवान शिव के विविध रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति का वर्णन है.

शिव पुराण में शिव के कल्याणकारी स्वरूप का तात्त्विक विवेचन, रहस्य, महिमा और उपासना का विस्तृत वर्णन है.

शिव पुराण में शिव को पंचदेवों में प्रधान अनादि सिद्ध परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया गया है. शिव पुराण में शिव के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके रहन-सहन, विवाह और उनके पुत्रों की उत्पत्ति के विषय में विशेष रूप से बताया गया है.

भोलेनाथ की सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती –प्राचार्य सुधीर महाजन

भक्ति की शक्ति अपार होती है. भक्ति की शक्ति से आदर्श आचरण और आदर्श आचरण से जिम्मेदार नागरिक का निर्माण होता है. जिस देश में नागरिक आदर्श होते हैं उस देश में राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए हर व्यक्ति अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभाता है. भगवान भोलेनाथ को देवाधिदेव महादेव कहते हैं और वह भक्तों की अल्प भक्ति से भी प्रसन्न होकर उनके जीवन में सुख और समृद्धि प्रदान करते हैं. अमरावती के प्राचीन महादेव मंदिर में हो रही गौ माता के अनन्य भक्त पूज्य शिव गुरु महाराज की शिव महापुराण कथा को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं. इस कथा में पधारने वाले सभी भोलेनाथ भक्तों की सभी मनोकामनाएं मनोकामनाएं भोलेनाथ पूरी करें और सुख समृद्धि और कामयाबी प्रदान करें, देव के चरणों में यही कामना.

गडगडेश्वर महादेव मंदिर की श्रृंगार टीम...

सावन के पावन महिने में भोलेनाथ का यह टीम इस कदर मोहक श्रृंगार करती है कि आनेवाले हर भक्त भोलेनाथ को निहारता और आत्मीक सुकुन की अनुभूती करता है...

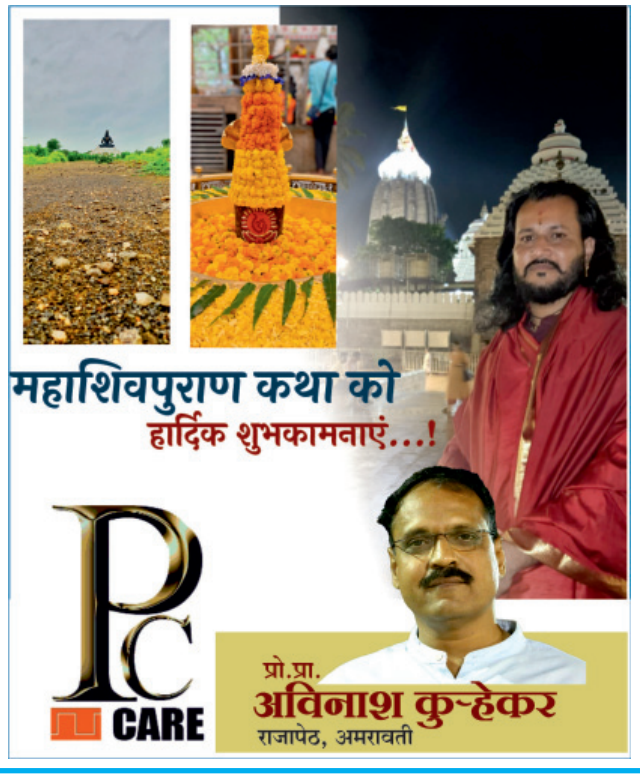

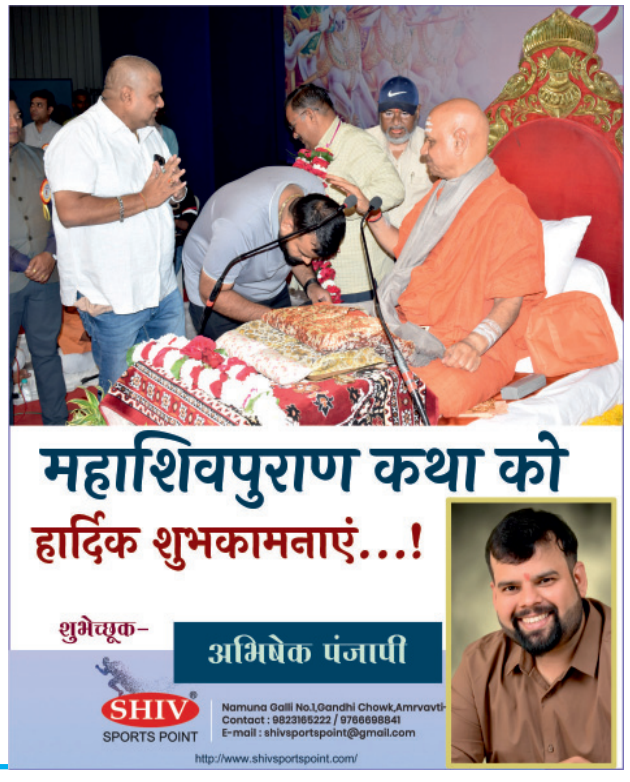

राष्ट्रधर्म होना चाहिए सबके लिए सर्वोपरि

पूज्य पूज्य शिव गुरु महाराज आदर्श संस्कारों को देते हैं महत्व
जब हम सुरक्षित हैं तो ही धर्म सुरक्षित रहेगा इसलिए राष्ट्र रखें पहले स्थान पर

अमरावती–देश अगर सुरक्षित रहेगा तो ही हम सभी सुरक्षित रहेंगे. धर्म करने के लिए हमारी सुरक्षा तथा देश की सुरक्षा दोनों ही जरूरी होती है. इसलिए देश के हर नागरिक के लिए राष्ट्रीय धर्म सर्वोपरि होना चाहिए. वर्तमान में पूरा विश्व हिंसा की चपेट में आ रहा है ऐसे में यह संकल्प लेना हर भारतीय का पहला कर्तव्य बनता है कि वह राष्ट्र के लिए अपना क्या योगदान दे सकता है. धर्म आदर्श आचरण सिखाता है.

गुरु जी के मुताबिक जीव दया का भाव हर व्यक्ति में होना चाहिए. हमारे शरीर की आत्मा जब तक जागृत रहती है तभी तक हम जिंदा रहते हैं. हमें हमें सदैव यही भाव रखना चाहिए कि अगर हम किसी का अच्छा नहीं कर सकते हैं तो प्रभु हमसे किसी का बुरा भी ना हो. माता पिता की सेवा और गौ माता की सेवा का सनातन धर्म में महत्वपूर्ण स्थान बताया गया है. आज संस्कारों के अभाव में कई दिक्कतें पैदा होती हैं. बचपन में अगर आदर्श संस्कार बच्चों को दिया जाए तो वह जीवन में कभी अपने माता–पिता को वृद्ध आश्रम में नहीं भेज सकता. बचपन में जिस बच्चे को पिता अपने साथ मंदिर लेकर जाता है वह बच्चा कभी भी पिता का साथ नहीं छोड़ सकता है. आधुनिकता ने हमारे संस्कारों का सत्यानाश किया है. समय जाने के बाद जिस तरह पछतावा करने का कोई अर्थ नहीं होता है इस तरह बचपन के संस्कार हर बच्चे के लिए

इमारत की पिलर के रूप में काम करते हैं. अगर पिलर मजबूत है तो इमारत कितनी भी मंजिल बने उसको कभी खतरा नहीं रहेगा. धर्म जोड़ने का काम करता है. तोड़ने की भाषा करने वाला कभी धर्म हो ही नहीं सकता है फिर चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों ना हो. शिव महापुराण कथाओं के माध्यम से लोगों को राष्ट्र प्रेम के लिए जागृत करने के साथ मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करने वाले पूज्य शिव शर्मा महाराज का कहना है कि

सुभाष दुबे
मो.नं.९४२३४२६१९९

धर्म के लिए आडंबर की जरूरत नहीं है. आडंबर करने वाला अथवा दिखाने वाला धार्मिक नहीं हो सकता.

भोलेनाथ हैं प्रथम गौ माता पालक

गौ माता की सेवा में पूरा जीवन समर्पित करने वाले पूज्य गुरु जी ने कहा कि गौ माता की सेवा का महान पुण्य मिलता है. भगवान भोलेनाथ गौ माता के पहले पालक हैं. उनकी ही प्रेरणा से भगवान श्री कृष्ण ने गौ माता के महत्व को पूरे विश्व में प्रचारित किया. गोलोक धाम गौशाला में ३०० से अधिक गौ माता की सेवा का महान कार्य वे करते हैं. अपनी कथाओं से प्राप्त होने वाली आय गंभीर रूप से घायल गौ माता की सेवा के साथ ही अन्य सेवाभावी कार्यों पर करते है. देशभर में कथाएं करते समय राष्ट्र धर्म को ही सर्वाधिक महत्व देने वाले पूज्य शिव शर्मा महाराज के मुताबिक देश की युवा पीढ़ी को व्यसन मुक्त होकर माता–पिता के साथ समाज और राष्ट्र का गौरव बढ़ाने के लिए योगदान देने का प्रयास करना चाहिए. विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि हमें जीवन में धर्म का आचरण करने के साथी राष्ट्र धर्म का सदैव सम्मान करना चाहिए. अमरावती को धार्मिक और पुण्यवनों की नगरी बताते हुए उन्होंने कहा कि यहां पर अच्छे काम का साथ देने वालों की कमी नहीं है.

निविदा सूचना

सरपंच, सचिव ग्रामपंचायत सार्सी ता. नांदगांव खं. जिल्हा अमरावती कडून देण्यात येतील. ग्रामपंचायत कार्यालय सार्सी ता. नांदगांव खं. जिल्हा अमरावती यांचे मार्फत १५ वा वित्त आयोग योजने अंतर्गत खालील कामाचे मोहोरबंद निविदा ब–१ टक्केवारी प्रपत्रामध्ये बांधकाम विभाग जी.प. अमरावतीच्या प्रवर्गातील नोंदणीकृत कंत्राटदाराकडून मागविण्यात येते आहे.

अ. क्र.	कामाचे नाव	अंदाजित किमत रक्कम	बयाना रक्कम	कोऱ्या निविदेची किंमत	अनामत रक्कम	लेखा शिर्षक	पंजीबध कंत्राट दाराचे वर्गीकरण	कामाचा कालावधी	निविदा दस्तऐवज दाखल करण्याचे दिनांक व वेळ	निविदा उघडण्याची तारीख व वेळ
१	सि.सी. रस्ता व नाली बांधकाम करणे मौजा सर्सी	३०००००	१३	३००	३०००	द.व. सु.यो	वर्ग ५ व त्यावरील	३ महिने	२३/०९/२०२४ सकाळी १० वा. पासुन ३०/०९/२०२४ दुपारी १२.०० वा. पर्यंत सुटीचे दिवस वगळून	दि.०३/०९/२०२४ दु.१.०० वाजता
२	नाली दुरुस्ती	१३००००	१३	३००	३०००	१५ वा वित्त आयोग				
३	पाणी पुरवठा विहिरीवरील दुरुस्ती व जाळी बसविणे	२०००००	१३	३००	३०००					
४	ग्रामपंचायत भवन दुरुस्ती	९००००	१३	३००	३०००					

टिप :–
१) निविदेच्या अटी व शर्ती ग्रामपंचायत कार्यालय सार्सी येथे कार्यालयीन वेळेस पहावयास मिळतील.
२) अनामत रक्कम डी.डी. स्वरुपात सरपंच सचिव सार्सी यांच्या नावाने काढण्यात यावा.
३) निविदा हि पंजीबध तांत्रिक व निविदा लिफाफा मध्ये असावेत, तांत्रिक लिफाफा उघडल्यानंतर सर्व कागदपत्रे असणे आवश्यक आहे नंतर वेळ दिल्या जाणार नाही.
४) निविदा स्वीकारण्याचे तसेच काही कारणास्तव निविदा रद्द करण्याचे अधिकार ग्रामपंचायत ने राखीव ठेवले आहे.

सरपंच/सचिव
ग्रामपंचायत सार्सी

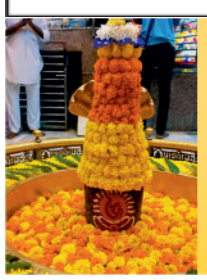
महाशिवपुराण कथा में पधारनेवाले
भक्तों का स्वागत एवं शुभकामनाएं...!